दिनांक :- 21-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- तृतीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- गुप्त काल

गुप्तों के उदय से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति :- गुप्त शक्ति के उत्थान के पहले ग्रीक तथा कुषाण साम्राज्य के पतनो परांत भारत में किसी बड़ी शक्ति का अस्तित्व नहीं था। संपूर्ण देश अनेक छोटे बड़े राज्यों में विभाजित था तथा ये राज्य परस्पर संघर्षरत भी थे। भारत में तीन प्रकार की शक्तियाँ थी - राजतंत्र गणतंत्र एवं विदेशी राज्य।

नागवंश :- गंगा घाटी मे कुषाणो की सत्ता के विनाश का श्रेय नागवंश को ही दिया जाता था।

तथा पद्मावती पुराणो में विवरण के अनुसार पद्मावती मथुरा तथा कान्तिपुर क्षेत्रो मे नाग कुलो का शासन था। मथुरा में सात तथा पद्मावती में नौ नाग राजाओं ने शासन किया। पद्मावती के नागकुल भारशिव नाम से भी जाने जाते थे। क्योकि वे अपने कंधो पर शिवलिंग वहन करते थे। इसी नाम के एक नाग शासक ने चौथी एवं पाँचवी शताब्दी में दस अश्वमेध किये थे इसी के नाम पर वाराणसी में दशाश्वमेध घाट का निर्माण हुआ इसी कुल के एक शासक भवनाग (306-40ई०) की पुत्री का विवाह वाकाटक नरेश प्रवर सेन प्रथम के साथ हुआ था। समुद्रगुप्त के समय पद्मावती के नाग कुल का शासक नागसेन था। इसका उल्लेख प्रयास प्रशस्ति मे भी

हुआ है। इस समय मथुरा मे गणपति नाग का शासन था

वाकाटकवंश :- इस राजवंश के संस्थापक विंध्यशक्ति सातवाहनो के अधीन बरार के स्थानीय शासक थे। विंध्य शक्ति के पश्चात् उसके पुत्र प्रवरसेन प्रथम ने सम्राट की उपाधि धारण की। उसके समय में वाकाटक साम्राज्य उत्तर के मध्य प्रांत तथा बुन्देलखंड से लेकर दक्षिण में उत्तरी हैदराबाद तक फैला था।

पुराणो के अनुसार इसने चार अश्वमेध यज्ञ किए तथा एक वाजपेय यज्ञ तथा अनेक वैदिक यज्ञ भी संपन्न किए। इसकी मृत्यु के पश्चात् वाकाटक साम्राज्य दो भागो में विभाजित हो गया! -(1) वत्सगुल्म शाखा (2) प्रधान शाखा शाखा का एक महत्वपूर्ण शासक पृथ्वीसेन प्रथम था। यह गुप्त शासक चंद्रगुप्त का समकालीन था। इसका सहयोग प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त

Scanned with CamScanner

का विवाह इसके पुत्र रुद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।
रुद्रसेन द्वितीय ने गुप्तो के प्रभाव में वैष्णव धर्म को
अपनाया परंतु 30 वर्ष की अल्पायु में ही उसकी मृत्यु
हो गई। उसके पश्चात् प्रभावती गुप्त ने अपने अल्पवय
एक पुत्र दिवाकर सेन तथा दामोदर सेन की तरफ से
शासनभार संभाला। इस समय से वाकाटक राज्यव्यवहा
रतः गुप्त साम्राज्य का अंग जैसा हो गया।
प्रभावती गुप्त ने अपने पूना अभिलेख में पिता के गोत्र
यानि धारण गोत्र का उल्लेख किया है।
पृथ्वीसेन द्वितीय इस वंश का अंतिम शासक था। इसके
पश्चात मुख्य शाखा का विलय वत्सगुल्म शाखा में हरि
षेण के हाथो में हो गया।
आभीर राजवंश :- इस वंश का संस्थापक ईश्वर सेन था
जिसने 248-49 ई० के लगभग कलचुरी चेदि संवत की
स्थापना की।

Scanned with CamScanner

इक्ष्वाकु : इस वंश का संस्थापक श्रीशान्तमूल था। यह पहले सातवाहनो का सामंत था। अपनी स्वतंत्रता के उपलक्ष्य मे इसने अश्वमेध यज्ञ किया। इक्ष्वाकु बौद्ध मत के पोषक थे।

मालव :- सिकंदर के समय यह गणतंत्र पंजाब क्षेत्र में स्थापित था। पाणिनी ने इसका उल्लेख आयुधजीवी संघ के रूप में किया है। समुद्रगुप्त ने इस पर विजय पाई।

यौधेय :- पाणिनी ने इसको भी आयुधजीवी संघ कहा है। इनका स्थान उत्तरी राजपूताना तथा पूर्वी पंजाब में था। इन के साम्राज्य में सतलुज के दोनो ओर की भूमि तथा बहावलपुर के क्षेत्र शामिल थे। यौधेय कार्तिकेय के उपासक थे।

औदुम्बर :- इस गण का उल्लेख अष्टाध्यायी, बृहत्संहिता मार्कण्डेय पुराण, विष्णु पुराण आदि में मिलता है। इन्हें विश्वामित्र का वंशज तथा कौशिक क्षेत्र का बताया गया है।

मैत्रक :- इस वंश में अग्रज के पश्चात अनुज को शासक बनाने की प्रथा थी।

Scanned with CamScanner

कुषाण साम्राज्य के विघटन के पश्चात मध्य भारत में मुरुंडो का शासन स्थापित हुआ जो 250 ई० तक शासन करते रहे। 275 ई० में गुप्तो ने अपने राजवंश की स्थापना की।

गुप्त राजवंश

साहित्यिक स्त्रोत :-

पुराण :- विष्णु वायु तथा ब्रह्माण्ड पुराण

विशाखदत्त का देवीचन्द्रगुप्तम्, कालिदास की विभिन्न कृतियाँ, शूद्रक का मृच्छकटिकम्, वात्स्यायन का कामसूत्र, पुरातात्विक स्त्रोत :- अभिलेख, सिक्के, स्मारक

यह अभिलेख अशोक के इलाहाबाद स्तंभ पर ही समुद्र गुप्त के कुमारामात्य तथा सन्धिविग्राहिक हरिषेण द्वारा संस्कृत भाषा के चम्पू शैली में अंकित किया गया है। इस पर कोई तिथि नही है।

इस पर अशोक तथा समुद्रगुप्त के अतिरिक्त अकबर के दरबारी बीरबल तथा जहाँगीर का भी एक लेख खुदा है।

इस अभिलेख में न तो समुद्रगुप्त के किसी अश्वमेध यज्ञ का जिक्र है और न ही उसकी मृत्यु की तिथि है।
इस अभिलेख में समुद्रगुप्त के सैन्य अभियानों का कोई श्रेणियों में विभक्त किया गया है। अभिलेख का प्रारंभिक भाग पद्य में है जिसके आठ श्लोक में समुद्रगुप्त की प्रारंभिक शिक्षा तथा राजा बनने की योग्यता का उल्लेख है।
इस अभिलेख में समुद्रगुप्त को चंद्रगुप्त तथा कुमारदेवी का पुत्र घटोत्कच का पौत्र तथा श्रीगुप्त का प्रपौत्र कहा गया है। यहाँ श्रीगुप्त तथा घटोत्कच के लिये महाराज तथा चन्द्रगुप्त प्रथम के लिए महाराजाधिराज उपाधि का प्रयोग किया गया है।
मेहरौली स्तंभ अभिलेख:- चन्द्रगुप्त द्वितीय। उदयगिरी शिलालेख:- गुप्त संवत - 82 में सनकानिक नामक सामंत ने अंकित करवाया। सांची शिलालेख: चन्द्रगुप्त द्वितीय के मंत्री आम्रकर्दव ने गुप्त संवत 93 में अंकित करवाया।

Scanned with CamScanner